ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

जालौर का राजनैतिक इतिहास और साहित्यकारों की समीक्षा

Political History of Jalore and Review of Litterateurs

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 20/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

सवाराम चौधरी
प्रधानाचार्य,
डॉ. भीमराव अंबेडकर बालिका आवासीय विद्यालय,
भैंसवाड़ा (जालोर),
राजस्थान, भारत

सारांश

जालौर के इतिहास संबंधी समूचे साहित्य का अध्ययन करने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि 'कान्हड़दे प्रबंध' इस इतिहास का मूल ग्रंथ माना जा सकता है।

जालौर पर हुए आक्रमण, राजनैतिक-सामरिक और साहित्यिक प्रवृत्तियाँ आदि को समझे जाने की आवश्यकता है।जालौर के इतिहास संबंधी समूचे साहित्य का अध्ययन करने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि 'कान्हड़दे प्रबंध' इस इतिहास का मूल ग्रंथ माना जा सकता है।

जालौर पर हुए आक्रमण, राजनैतिक-सामरिक और साहित्यिक प्रवृत्तियाँ आदि को समझे जाने की आवश्यकता है।

On studying the entire literature related to the history of Jalore, it seems clear that 'Kanharde Prabandha' can be considered as the original text of this history.There is a need to understand Jalore's invasion, political-strategic and literary trends etc. On studying the entire literature related to the history of Jalore, it seems clear that 'Kanharde Prabandha' can be considered as the original text of this history.The Jalore invasion, politico-strategic and literary trends etc. need to be understood.

मुख्य शब्दः जालौर, अलाउद्दीन, कान्हड़देव, इतिहास, संघर्ष, युद्ध, साहित्य, शासक, ग्रंथ, वर्णन, राज्य।
Keywords: Jalore, Alauddin, Kanhad Dev, History, Struggle, War, Literature, Rulers, Texts, Description, State

प्रस्तावना

राजस्थान के जालौर जिले का इतिहास समृद्ध रहा है। अनेक राजवंशों ने जालौर राज्य पर शासन किया है। अलाउद्दीन खिलजी और कान्हड़देव के संघर्ष का वृत्तांत जालौर के इतिहास और साहित्य की कुंजी है।

राजस्थान का इतिहास युद्धों, संघर्षों, त्याग, समर्पण, सम्मान के साथ-साथ राजनैतिक षड़यंत्रों और सत्तालोलुपता के धोखे और खूनखराबे को भी अभिव्यक्त करता रहा है। राजस्थान के अनेक ऐसे क्षेत्र रहे हैं जहाँ वीरता और त्याग शिलाओं के साथ-साथ जुबानों, विचारों और मन-मस्तिष्क पर अंकित हो गया है।

प्राचीन समय से ही गोड़वाड़ की धरा वीर प्रसूता और गुणों की खान रही है। कान्हड़देव की बौद्धिकता और वीरमदेव की वीरता जालोर जैसे क्षेत्र की शौर्यगाथा को और भी अमर बना डालती है।

'वीरमदे सोनगरा की वात' जैसी अर्द्ध ऐतिहासिक रचना में अलाउद्दीन खिलजी जैसे ताकतवर शासक द्वारा जालोर पर किये आक्रमण की जानकारी मिलती है। 'कान्हड़दे प्रबंध' जैसी कृति को रचकर पद्मनाभ ने स्वयं को ख्यात रचयिता सिद्ध किया। सन् 1544 ई. के आसपास लिखी गयी इस रचना में जालौर के प्रतापी शासक कान्हड़दे और दिल्ली के ताकतवर सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मध्य हुए भीषण संघर्ष का वृतांत है। डॉ. कालूराम शर्मा तथा डॉ. प्रकाश व्यास के अनुसार - "यह ग्रंथ जैन देवनागरी में लिखा हुआ है और इससे राजस्थानी भाषा के विकास, समकालीन भूगोल, सामाजिक परम्पराओं, सैन्य-व्यवस्था आदि के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।"

'कान्हड़दे प्रबंध' प्रशासन, राजनीति और आर्थिक क्षेत्र का बेहतरीन वर्णन करने वाला गं्रथ है जो जालौर और समूचे गोड़वाड प्रदेश के साथ-साथ राजस्थान तथा भारत भर के ताकतवर साम्राज्यों का विवरण प्रस्तुत करता है।

जालोर प्राचीनकाल से ताकतवर रियासत रही है। इस क्षेत्र पर विभिन्न वंश के शासकों का कब्जा रहा है। इसका वृतांत प्रेमचन्द्र गोस्वामी ने दिया है - "प्रतिहार नरेश नागभट्ट प्रथम ने ही संभवतः जालौर के ऐतिहासिक दुर्ग का निर्माण करवाया व सीमा पर से होने वाले अरब आक्रमणों का समशक्त व सफल प्रतिरोध कर सका। प्रतिहारों के पश्चात् जालौर पर परमारों का शासन स्थापित हुआ। परंतु धीरे-धीरे परमार निर्बल होते गये और उन्होंने कभी स्वतंत्र तो कभी गुजरात के चालुक्य नरेशों के सामंत के रूप में वहाँ शासन किया।"[2]

सल्तनत काल हो या मध्यकाल..... या फिर अंग्रेजी दासता का युग - राजस्थान में राजनैतिक उथल-पुथल हमेशा चरम पर रही और जालौर भी इससे अछूता नहीं रहा। जालौर को जीतने के लिए तुर्क

और मुगल शासकों ने विशेष प्रयास किये किन्तु वे लंबे समय तक इस क्षेत्र पर अपना नियंत्रण नहीं रख पाए। जालौर के संपन्न राजस्व क्षेत्रों पर भी कब्जे की कोशिशें होती रहीं लेकिन उन्हें नियमित रूप से कब्जे में बनाए रखने में शत्रुपक्ष सफल नहीं हो सके। डॉ. कालूराम शर्मा जालौर के समृद्ध क्षेत्र भाद्राजून का वर्णन करते हुए लिखते हैं - "1539ई. में मालदेव ने भाद्राजून पर आक्रमण किया। इस अभियान में मेड़ता के वीरमदेव ने भी मालदेव का साथ दिया। कुछ दिनों के संघर्ष के बाद वीरा मारा गया और भाद्राजून पर मालदेव का अधिकार हो गया।"[3]

जालौर पर अलाउद्दीन की सेना द्वारा घेरा डालकर बैठ जाने का जो वर्णन 'कान्हड़दे प्रबंध' में है, उसका चित्रण आकर्षक और बिम्ब रूपीय लगता है-

"आव्या तुरक पाडूऊं करिउं, स तुं नगरि सहू को धरिउं।
गोरी मलिक धणेरी हाम, ताषति करी लगाडिडे गाम॥"[4]

यह वर्णन तत्कालीन हालात की भयावहता को दर्शाता है।

लूनी नदी की उपनदी सूकड़ी के दक्षिण में बसा हुआ जालौर प्राचीनकाल से ही आक्रांताओं के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। गुजरात जैसे समृद्ध राज्य से निकटता और मेवाड़ से भी अधिक दूरी ना होने के कारण यह क्षेत्र संपन्न था और अलाउद्दीन खिलजी जैसे ताकतवर शासक भी इसकी पूरी जानकारी लेते थे।

अलाउद्दीन खिलजी की सेना जब लंबे समय तक जालौर के किले को घेर कर पड़ाव डाले रही तो 1311 ई. में जालौर के ही बीका दहिया ने किले की सुरक्षा का भेद खिलजी की सेना को दे दिया और खिलजी की सेना ने जालौर दुर्ग पर हमला कर भीषण कत्लेआम मचाया..... कान्हड़दे का पुत्र वीरमदेव वीरगति को प्राप्त हुआ।

खिलजी के हमले और जालौर की सामरिक स्थितियों को विभिन्न इतिहासकारों ने अपने-अपने ढंग से अभिव्यक्त किया है। खिलजी की पुत्री फिरोजा द्वारा वीरमदेव से एकपक्षीय प्रेम का वृतांत भी इतिहासकार यथार्थ और कल्पना का मिश्रण मानते हैं।

'कान्हड़दे प्रबंध' यद्यपि कान्हड़देव और खिलजी के समय का इतिहास माना जाता है लेकिन इस ग्रंथ के अनेक तथ्यों में विरोधाभास मिल जाता है। मुनि जिन विजय द्वारा 'कान्हड़दे प्रबंध' जो 'राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर' (राज.) से प्रकाशित हुआ है उसके संपादकीय में इस ग्रंथ के बारे में टिप्पणी है - "इस प्रबंध को जो राजस्थानी महाकाव्य कहा है, उसके पीछे दो अर्थ लक्षित हैं - एक तो यह कि इस काव्य में राजस्थानी वीर की पुनीत गाथा गाई गई है और दूसरा यह कि यह प्राचीन राजस्थानी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कृति है।"[5]

जालौर के इतिहास को आधार बनाकर लिखे गये समूचे साहित्य में खिलजी कान्हड़दे और राजनैतिक-व्यापरिक दशाओं पर अधिक ध्यान केन्द्रित रखा गया है।

अधिकांश इतिहासकार स्पष्ट तौर पर मानते है कि खिलजी और कान्हड़दे के संघर्ष का कारण राजनैतिक था, लेकिन कुछ इतिहासकार खिलजी की पुत्री फिरोजा के प्रसंग को युद्ध का कारण मानते हैं।

कई तथ्यों के अनुसार कान्हड़दे द्वारा खिलजी की सेना के खिलाफ किये गये वीरतापूर्ण संघर्ष में खिलजी या उसका मुख्य सेनापति मल्लिक काफूर मौजूद नहीं थे।.....

'कान्हड़दे प्रबंध' में उल्लेख है कि अलाउद्दीन इस संघर्ष में कुछ समय के लिए आया और कान्हड़देव के सहायक मालदेव को रोकने में सफल रहा, लेकिन इतिहासकार मोहनलाल गुप्ता लिखते हैं कि - "इस कथानक में सुलतान (अलाउद्दीन) का युद्ध क्षेत्र में आना और विशेष कोई उपलब्धि हासिल किये बिना लौट जाना सही नहीं जान पड़ता है। यह संभव है कि मालदेव की मुठभेड़ वहाँ मुस्लिम सेना से हुई हो, वहाँ से मालदेव जालौर किले पर घेरा डाले पड़ी खिलजी सेना की तरफ लौटा हो।"[6]

मोहनलाल गुप्ता फिरोजा द्वारा वीरमदेव से प्रेम रखने की बात को ऐतिहासिक रूप से सही मानते हैं। वीरमदेव द्वारा अलाउद्दीन के दरबार में जाना और अपने लौटने की जमानत के तौर पर बनवीर के पुत्र राण को खिलजी के पास छोड़ आना आदि घटनाओं का जिक्र भी वे इसी सिलसिले में करते हैं।

"वीरमदेव के संकेत अनुसार राण बादशाह से कहता कि वीरमदेव बारात की तैयारी कर रहा होगा, शीघ्र आयेगा। इस प्रकार दो-चार महीने निकल गये।"[7]

'कान्हड़दे प्रबंध' की रचना के संबंध में मुनि जिन विजय ने माना है कि इस ग्रंथ में जो घटनाक्रम वर्णित है वह भारत के लिये भयंकर प्रलय का समय था।

'वसन्त विलास' तथा 'कीर्ति कौमुदी' जैसे ग्रंथों में भी कुमारपाल की वीरता और प्रशासनिक योग्यता का उल्लेख मिल जाता है।

माना जाता है कि आचार्य हेमचन्द्र के प्रभाव से कुमारपाल ने जैन धर्म अंगीकार कर लिया था।

जालौर पर खिलजी की सेना के आक्रमण और बीका दहिया द्वारा दुर्ग का भेद जानने और फिर बताने की बात को मोहनलाल गुप्ता उचित नहीं मानते। वे लिखते हैं - "जालौर का दुर्ग दहियों द्वारा बनाये जाने की बात इतिहास सम्मत नहीं है। संभव है कि चौहानों के काल में दहियों की देखरेख में दुर्ग का जीर्णोद्धार या मरम्मत कार्य करवाया गया होगा।"[8]

वास्तव में मोहनलाल गुप्ता द्वारा प्रस्तुत वर्णन विरोधाभासी है क्योंकि दहिया अगर दुर्ग की मरम्मत का कार्य करवा रहे थे तो दुर्ग की कमजोर दीवारों का उन्हें अवश्य ज्ञान रहा होगा।

सांचौर जालौर के अंतर्गत आने वाला जिला है लेकिन प्राचीन समय ये हुकूमत मजबूत थी और इस पर यादव, परमार और नाडौल चौहानों ने राज किया था। बिहारी पठानों ने चौहानों को वहाँ से खदेड़ा और अंततः जहाँगीर के विशाल साम्राज्य में इस क्षेत्र को मिला लिया गया।

जालौर के इतिहास संबंधी जितनी भी प्राप्त सामग्री है उसमें कान्हड़देव के संबंध में ही अधिक जानकारी उपलब्ध होती है। शेष राजाओं के संबंध में तुलनात्मक रूप से कम जानकारी ही मिल पाती है

'कीर्ति कौमुदी' के रचयिता गुर्जरेश्वर पुरोहित सोमदेश्वरदेव ने यशोवीर जैसे मंत्री को जालोर दुर्ग की शोभा बताया है।

'कान्हड़दे प्रबंध' में युद्ध का जो वर्णन है वह आंखों देखे हाल जैसा दिखाई देता है। इस ग्रंथ के 'चतुर्थ खंड' को पढ़कर इस तथ्य का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है -

"दीधी झांप पांचसइ राउति, नीची कांधिल पूठि।
मारी म्लेच्छ पडया सवि पायक, कान्हड़देनी द्रेठि॥
तिणई ठामि कान्है उल्हीचउ रिणवट बाँधी धायु।
षरे बिपुहरे धणूं दल गंजी पछई पडिड रिण घाउ॥
त्रीजई पुहरि बांधीउ रिणवहि, शोभित सांझी वार।
ऊडयां लोह घणा भड भागा, पडतई कीधउ मार॥
आंधी रातिं जइत देवडउ तुरक तणई दलि भिडीउ।
मारी म्लेच्छ भीछ मचकोड्या, पछई प्रहारे पडीउ॥
जहूत वाधेलउ पुहर पाहिलई भलउ भिड़यड रिण माहि।
मारी म्लेच्छ पडिउ घण घाए, अंगि एतली आहि॥"[9]

जालौर के समूचे इतिहास में इस प्रकार के घटनाक्रम को महत्वपूर्ण माना गया है। स्थापत्य, प्रशासन, आर्थिक विकास आदि के स्थान पर राजनीति और संघर्षों का वृत्तांत जालौर के संदर्भ में अधिक होता है।

परमार राजा देवराज का पुत्र कृष्णराज जिसने जालौर, भीनमाल और आबू पर शासन किया था, उसके बाद मूलराज जैसा शासक हुआ और उसके पोते दुर्लभ राज ने सत्ता से स्वयं को अलग कर लिया तो दुर्लभराज के भतीजे भीमदेव प्रथम ने शासन शुरू किया लेकिन उसके समय में सोमनाथ का हमला हुआ और भीमदेव अपनी राजधानी सांचौर से भाग निकला। अंत में उसने भी राज्य त्याग दिया।

कुमारपाल जैसे शासक ने 1143 ई. से 1171 ई. तक राज किया और 'प्रबंध चिंतामणि' जैसे गं्रथ में इस संबंध में सम्पूर्ण वृतांत मिल जाता है।

चाचिंग देव और सामंतसिंह जैसे शासकों ने जालोर को समृद्ध और मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। जिन प्रभासूरि कृत 'विविध तीर्थ कल्प' रचना में इसका उल्लेख मिलता है।

बरनी और नैणसी जैसे साहित्यकारों ने भी किसी ना किसी संदर्भ में जालौर राज्य का उल्लेख किया ही है। डॉ. दशरथ शर्मा ने खिलजी के सेनापति ऐतुलमुल्क मुल्तानी की धूर्तता, निकृष्टता और पराजय को उत्कृष्ट और मनोरंजक यथार्थ के साथ ऐतिहासिक वृतांत के रूप में सामने रखा है।

जालौर पर सोभित चौहान से लेकर परवर्ती चौहानों के शासन का वर्णन नैणसी ने किया है। बोड़ा चौहान, कांपलिया चौहान और देवड़ा चौहानों का वृतांत ध्यान देने योग्य है।

राठौडों ने भी जालौर पर शासन किया है, 18 वींशती आते-आते अभयसिंह ने जालौर का परगना बखतसिंह को दे दिया था लेकिन रामसिंह से उसका सत्ता विवाद हो गया।

जालौर के इतिहास में ऐसे भी घटनाक्रम हुए हैं कि जालोर को शर्मसार होना पड़ा। मोहनलाल गुप्ता लिखते हैं - "1772 ईस्वी में जब रामसिंह की मृत्यु हो गई तब 1785 ईस्वी में विजयसिंह ने दुबारा से जालोर पर अधिकार कर लिया और अपनी पड़दायत पासवान गुलाबराय को जागीर में दे दिया।" [10]

भीनमाल जैसे क्षेत्र पर सबसे प्राचीन शासक चावड़ों को माना जाता है।

कर्नल टॉड ने चावड़ों को सीथियन माना है। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने चावड़ों का वृत्तांत विस्तार से प्रस्तुत किया है।

डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने राजपूतकालीन जालौर का वृत्तांत एक छप्पय के रूप में प्रस्तुत किया है -

"मंडोवर सामंत, हुवो अजमेर सिद्ध सुव।
गढ़ पूंगल गजमल्ल, हुवो लोद्रवे भाणभुव॥
अल्ह पल्ह अरबद्द, भोजराजा जालध्ंार।
जोगराज धरघाट, हुवो हांसू पारक्कर॥
नव कोट किराडू संजुगत, थिर पंवार हर थप्पिया,
धरणी वराह धर भाइयां, कोट बांट जूं-जंू दिया।" [11]

इस प्रकार जालौर के इतिहास का वृत्तांत अनेक साहित्यकारों ने अपनी-अपनी दृष्टि से किया है। जालौर का इतिहास परवर्ती काल में ध्वंस, पराभव और दुर्दशा का इतिहास रहा है। प्राचीनकाल से ही इतने वैभवशाली रहे जालौर का गौरवशाली इतिहास इतने झंझावातों के बावजूद अपना वजूद रखता है।

उद्देश्य

'जालौर का राजनैतिक इतिहास और साहित्यकारों की समीक्षा' विषयक शोध-आलेख से जालौर के इतिहास संबंधी तर्क, तथ्य, धारणाओं, मिथकों और वास्तविकताओं एवं यथार्थ को जानना-समझना आसान हो सकेगा और जालौर के इतिहास को विधिवत् स्वरूप देने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकेगा।

निष्कर्ष

जालौर के इतिहास को साहित्य के माध्यम से समझा जा सकता है। जालौर के राजनैतिक-आर्थिक और सामाजिक महत्व को साहित्य में जिस रूप में दर्ज किया गया है वह पाठकों और बुद्धिजीवियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *राजस्थान का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, पृष्ठ 24*
2. *राजस्थानः संस्कृति, कला एवं साहित्य - डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, पृष्ठ 50*
3. *राजस्थान का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - डॉँ. कालूराम शर्मा, डॉ. प्रकाश व्यास, पृष्ठ 138*
4. *कान्हड़दे प्रबन्ध (विविध पाठभेद, विस्तृत प्रस्तावना, परिशिष्टादि समन्वित) - संपादक - प्रो. कान्तिलाल बलदेवराम व्यास, पृष्ठ 107*
5. *कान्हड़दे प्रबन्ध (विविध पाठभेद, विस्तृत प्रस्तावना, परिशिष्टादि समन्वित) - संपादक - प्रो. कान्तिलाल बलदेवराम व्यास, पृष्ठ 3*
6. *जालोर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - मोहनलाल गुप्ता, पृष्ठ 151-152*
7. *जालोर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - मोहनलाल गुप्ता, पृष्ठ 144*
8. *जालोर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - मोहनलाल गुप्ता, पृष्ठ 112*
9. *कान्हड़दे प्रबन्ध (विविध पाठभेद, विस्तृत प्रस्तावना, परिशिष्टादि समन्वित) - संपादक - प्रो. कान्तिलाल बलदेवराम व्यास, पृष्ठ 207*
10. *जालोर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास - मोहनलाल गुप्ता, पृष्ठ 186*
11. *राजपूताने का इतिहास भाग 1 - डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, पृष्ठ 193*